MAHARAJA AGRASEN INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES
(A unit of Maharaja Agrasen Technical Education Society)
Affiliated to GGSIP University; Recognized u/s 2(f) of UGC
Recognized by Bar Council of India; ISO 9001: 2015 Certified Institution
Maharaja Agrasen Chowk, Sector 22, Rohini, Delhi - 110086, INDIA
Tel. Office: 8448186947, 8448186950 www.maims.ac.in

गूलर का वृक्ष (Ficus racemosa Tree)

कहावत है कि जिसने गूलर का फूल देख लिया, उसका भाग्य चमक जाता है। गूलर का पेड़ या गूलर का फूल कोई साधारण पेड़ या फूल नहीं है, बल्कि एक उत्तम जड़ी-बूटी भी है।
आयुर्वेदिक ग्रंथों में गूलर का पेड़ हेमदुग्धक, जन्तुफल, सदाफल आदि नामों से प्रसिद्ध है। इसके तने या डाल आदि में किसी भी स्थान पर चीरा लगाने से सफेद दूध निकलता है। दूध को थोड़ी देर रखने पर पीला हो जाता है, इसलिए इसे हेमदुग्धक कहा जाता है। गूलर के फलों में ढेर सारे कीड़े होने के कारण इसे जन्तुफल कहा जाता है। बारह महीने फल देने के कारण इसे सदाफल कहते हैं।
गूलर के उपयोगी भाग : पत्ते , छाल, फल , गूलर का फूल, तना, जड़, जड़ की छाल, दूध |

गूलर के फायदे और उपयोग

- गूलर के दूध से बवासीर का इलाज होता है
- गूलर के फलों के सूखे छिल्कों को (बीज रहित) महीन पीस लें। इसमें बराबर भाग में मिश्री मिला लें। इसे 6-6 ग्राम सुबह-शाम गाय के दूध के साथ सेवन करने से डायबिटीज में लाभ होता है
- मुंह के अल्सर में गूलर से लाभ होता है
- गंडमाला (ग्वायटर) रोग में गूलर के पत्ते से लाभ होता है
- गूलर का फल खाने से पेट का दर्द और गैस की समस्या ठीक होती है
- गूलर में कठिन से कठिन घाव को ठीक करने की क्षमता है। गूलर के दूध में रूई का फाहा भिगोकर नासूर यानी पुराने पर रखें। इससे घाव ठीक हो जाता है
- अल्सर से राहत दिलाने में लाभकारी है गूलर
- गूलर में पाए जाने वाले शीत गुण के कारण यह अल्सर जैसी परेशानी में भी लाभ पहुंचाता है। शीत होने के कारण यह अल्सर के स्थान पर ठंडक प्रदान कर घाव को जल्दी ठीक होने में मदद करता है
- गूलर में रोपण यानी हीलिंग का गुण पाया जाता है जो कि घाव को भरने में या जल्दी ठीक करने में मदद करता है।